हिंदी व्याकरण
CAREER FOUNDATION
अलंकार
कभी नहीं भूलोगे
•LIVE 2PM
BY- PANKAJ SIR

अलंकार

- काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्वों को अलंकार कहा जाता है।

- अलंकार प्रवृति के जनक आ० भामह को माना जाता है ।

अलंकार तीन प्रकार के होते है।

(i) शब्दालंकार –

(ii) अर्थालंकार

(iii) उभयालंकार

(1) शब्दालंकार :– जिस अलंकार में शब्दों के माध्यम से काव्य को सजाया जाता है। उसे शब्दालंकार कहते है।

जैसे :– अनुप्रास , यमक , श्लेष , वक्रोक्ति आदि ।

(क) अनुप्रास अलंकार :– जहाँ एक ही वर्ण की आवृत्ति लगातार कई बार होती है वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

जैसे :– जय जय भारत भूमि भवानी ।

अमरों ने भी तेरी महिमा बारम्बार बरवानी।।

अनुप्रास अलंकार के 5 भेद है।

(i) छेकानुप्रास – जहाँ कोई वर्ण लगातार दो बार आए।

– सुर समर करनी करहिं

(ii) वृत्यानुप्रास अलंकार – जहाँ एक ही वर्ण की आवृत्ति लगातार दो से अधिक बार आये ।

– भूरी–भूरी भेदभाव भूमि से भाग दिया।

(iii) लाटानुप्रास अलंकार – जब किसी वाक्य या उपवाक्य की आवृत्ति उसी अर्थ में होती है किन्तु उसके मूल अर्थ में अंतर होता है।

– उसे रोको, मत जाने दो।
उसे रोको मत, जाने दो ।।

(iv) अन्त्यानुप्रास अलंकार :– जब किसी पंक्ति में अंतिम अक्षर की आवृत्ति लगातार होती है, वहाँ अन्त्यानुप्रास अलंकार होता है।

– प्रभु जी तुम दीपक हम बाती।
जाकी जोति बरे दिन राती ।।

(v) श्रुत्यानुप्रास अलंकार :– जब एक ही वर्ग (माधुर्य वर्ग) के वर्णों की आवृति बार–बार होती है ।

– दिनांत था थे दीनाणाथ डुबते । सधेनु आते गृह ग्वाल बाल थे।

(ख) श्लेष (चिपका हुआ) अलंकार :– जब कोई शब्द एक ही बार प्रयोग में आया हो किन्तु प्रसंग के अनुसार उसके दो या दो से अधिक अर्थ हो वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

– पानी गये न उबेरे, मोती मानुष चुन ।।

(ग) यमक अलंकार :– जब कोई शब्द दो या दो से अधिक बार प्रयोग में आया हो तथा हर बार उसे अर्थ अलग–अलग हो वहाँ यमक अलंकार होता है।

– कनक –कनक ते सौ गुनी , मादकता अधिकाय।
यही खाये बौराय जग , या पाये बौराय ।।

(घ) वक्रोक्ति अलंकार :– जब किसी वाक्य में वक्ता के कथन का आशय किसी दूसरे अर्थ में लिया जाता है वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है।

– देते है वरदान शिव भाव चाहिए मीत,
भोले को वरदान हित भाव चाहिए मीत

(2) अर्थालंकार :– जब किसी काव्य में उसके अर्थ के द्वारा सजाया या अलंकृत किया जाता है वहाँ अर्थालंकार होता है।

उपमेय :– वह मुख्य वस्तु जिसके विषय में बात हो रही है। (मानव शरीर के अंग /भाव)

उपमान :– वह वस्तु जिससे मुख्य वस्तु की तुलना हो रही है। (प्राकृतिक वस्तु)

(i) उपमा अलंकार :– जहाँ उपमेय में उपमान की समानता बताई जाए । ''अर्थात जहाँ मुख्य वस्तु को किसी दुसरी वस्तु के समान बताया जाता है वहाँ उपमा अलंकार होता है।

जैसे :– राधा बदन चंद्र सो सुन्दर ।

(ii) रूपक अलंकार :– जहाँ उपमेय में उपमान का आरोप किया जाये अर्थात् जब मुख्य वस्तु उपमान का रूप ले ले वहाँ रूपक अलंकार होता है।

– पायो जी मैंने राम–रतन धन पायो।

(iii) उत्प्रेक्षा अलंकार :– ''जहाँ उपमेय में उपमान की कल्पना की जाय।''

– उस काल के मारे क्रोध के तन काँपने उसका लगा।

मानो हवा के वेग से सोता हुआ सागर जगा।।

(iv) अतिश्योक्ति अलंकार :– किसी बात को बढ़ा चढ़ाकर पेश किया जाना अतिश्योक्ति अलंकार कहलाता है।

–इतना रोया था मैं उस दिन ताल तलैया सब भर डाले ।

(v) संदेंह अलंकार – जहाँ उपमेय के लिए दिए गए उपमानों में सन्देह बना रहे तथा यह निश्चित न किया जा सके कि वास्तविक स्थिति क्या है वहाँ सन्देह अलंकार होता है।

– भूखे नर को भूलकर , हरी को देते भोग।

पाप हुआ या पुण्य यह , करू हर्ष या सोग ।।